अध्यक्षीय संदेश.....

आप से एक बार फिर बात करते हुए अच्छा लग रहा है, जिनके लिए खेती–किसानी मात्र जीविकोंपार्जन या धन–उपार्जन का साधन मात्र नहीं, बल्कि यह अपने आप में एक सभ्यता है। किसान को मालूम नहीं होता कि वह जो मेहनत कर रहा है वह निश्चित रूप से फल देगा, फिर भी वह खेती करता है। उसकी खेती खुले में मौसम के सहारे हो रही है। अनिश्चितता को कम करने के लिए ही अच्छे बीजों के प्रयोग को बढ़ावा दिया जाता है, शस्य क्रिया को वैज्ञानिक आधार दिया जाता है। सिंचाई की सुविधाएं दी जाती हैं। इन सिद्ध पद्धतियों को अपनाने का ही नतीजा है कि आज लगभग उतनी ही जमीन में देश 140 करोड़ लोगों के लिए समुचित अन्न उत्पादन कर पा रहा है, जहां वह 35 करोड़ लोगों के लिए भी आयात करता था।

अब भी देश में लगभग 50 प्रतिशत खेती मौसम पर निर्भर है। सारे कृषि क्षेत्र को सिंचाई में ला पाने के लिए साधन और संसाधन दोनों की कमी है। साथ ही सिंचाई की सुविधा होते ही किसान ऊँचाई वाले क्षेत्रों में भी ज्यादा पानी वाली फसलों का उत्पादन करने लगते हैं। यह ठीक नहीं। पानी बचाना बहुत जरूरी है। इसलिए उन फसलों पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए जो मौसम के पानी से भी ज्यादा फायदा दे सकें। आज भारतीय कृषि बड़ी अनिश्चितता के दौर में है। अतिवृष्टि और अनावृष्टि झेलती खेती में रबी 2021–22 का उत्पादन प्रभावित हुआ। गेहूं का उत्पादन लगभग 20 प्रतिशत कम रहा। खरीफ 2022 में धान के उत्पादन में 25–30 प्रतिशत या उससे भी ज्यादा कमी की संभावना है। बहुत बड़े क्षेत्र में धन की रोपाई नहीं हो पायी। जहां हुई भी, वहां पानी की कमी के नाते फसल कमजोर है। खेती पर 65 प्रतिशत लोग और 55 प्रतिशत श्रमिक निर्भर हैं। इतने लोगों पर आर्थिक असर हमारी आत्म निर्भरता पर बहुत प्रतिकूल असर लाता है।

मात्र दो साल पहले तक कृषि उत्पादन के मामले में देश लगातार आगे बढ़ रहा था। दो सीजन से ज्यादा मुश्किल आ रही है। किसान के खाने भर पैदा हो भी जाय तो उसकी अन्य जरूरतों के लिए साधन की कमी हो जाती है। उनके बच्चों की पढ़ाई, इलाज और अन्य चीजों पर असर पड़ता है। बुरा असर देश पर भी पड़ता है। भूमिहीन और गरीब लोगों की अन्न सप्लाई पर और देश की अर्थव्यवस्था पर असर पड़ता है। मौसम के अनिश्चितता में जलवायु परिवर्तन का हाथ है। मौसम के व्यवहार के बारे में अब भविष्यवाणियाँ भी सटीक नहीं बैठ रही हैं। यह स्थिति बड़े बदलाव की मांग कर रही है जिसमें वैज्ञानिकों को बताना पड़ेगा कि किसान शस्य क्रियाओं में क्या परिवर्तन करे। अब वैज्ञानिकों और कृषि विभाग के लोगों का मंथन जरूरी है, ताकि किसानों को उसी अनुसार खेती करने के लिए राय मिले।

अभी समय है सामंजस्य बिठाने का, जिसमें खेती कम खर्च में हो पाये, जलवायु परिवर्तन का असर कम पड़े और धीरे–धीरे आबोहवा में गुणात्मक परिवर्तन हो। साथ ही खेतिहर लोगों के पास आमदनी के अन्य कार्यक्रम बिस्तारित हों ताकि खेती की आंशिक क्षति के बाद भी उनकी दिन–प्रतिदिन के प्रगति में रूकावट न आये।

यही उद्देश्य है 'राजर्षि सन्देश' का कि वह किसानों को बतायें कि अगले मौसम में कौन–कौन सी फसलों की लाभकारी खेती कैसे की जाए। यह वैज्ञानिक संदेशों को किसान तक पहुंचने का माध्यम है। ''राजर्षि सन्देश'' का यह अंक आपके हाथ में है। हमें आशा है कि किसान भाई के लिए लाभदायक सिद्ध होगा। रासा राजर्षि सन्देश प्रकाशित करने वाली टीम को साधुवाद।

– अवधेश कुमार सिंह

अध्यक्ष

रॉयल विज्ञान सेवित सामाजिक–सांस्कृतिक उन्नयन संस्था

सम्पादकीय.....

रॉयल विज्ञान सेवित सामाजिक–सांस्कृतिक उन्नयन संस्था (रासा) की हिंदी पत्रिका 'राजर्षि संदेश' साल में दो बार प्रकाशित की जाती है। इस पत्रिका के द्वारा देश के छोटे–बड़े सभी किसानों को उनकी आमदनी बढ़ाने के लिए कृषि एवं कृषि से सम्बंधित विभिन्न विषयों पर वैज्ञानिक जानकारी दी जाती है।

'राजर्षि संदेश' का यह 2022 वर्ष का प्रथम अंक है जिसमें ई–गन्ना एप बना किसानो के चहुमुखी विकास में संजीवनी, ड्रैगन फ्रूट की खेती एवं उससे होने वाले फायदे, फसल अवशेष प्रबन्धनः वर्तमान कृषि की विशेष आवश्यकता, शहरी मधुमक्खी पालनः एक लाभदायक साइड बिजनेस, पादप रोग नियंत्रण हेतु उपयोगी कृषि विधियां, धान के प्रमुख रोगों के लक्षण एवं उनका नियंत्रण आदि लेख सम्मिलित किए गए है। इसके आलावा जुलाई से दिसम्बर तक विभिन्न फसलों में होने वाली शस्य क्रियाओं को भी सम्मिलित किया गया है। इन लेखों के द्वारा किसान भाई व बहने अपने फार्म की उत्पादकता एवं आमदनी बढ़ा सकते हैं।

हम इस अंक के सभी लेखकों का धन्यवाद करते हैं जिन्होंने अपने व्यस्त समय से अपना बहुमूल्य समय निकालकर उपर्युक्त विभिन्य विषयों पर अपना–अपना लेख भेजा।

– सम्पादकीय मण्डल